LATEST EDITON

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

(REET मुख्य परीक्षा हेतु)

2 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग - 5 शैक्षणिक मनोविज्ञान +सूचना तकनीकी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

REET LEVEL - 2

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 5

शैक्षणिक मनोविज्ञान + सूचना तकनीकी

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order at ➡ https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes

Whatsapp Link – https://wa.link/hx3rcz

Contact us at – 8233195718 + 8504091672

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

शैक्षणिक मनोविज्ञान

1. शैक्षिक मनोविज्ञान : अर्थ, क्षेत्र एवं कार्य 1
2. बाल विकास : अर्थ, बाल विकास के सिद्धान्त एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक 13
3. बाल विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव 29
4. व्यक्तित्व : संकल्पना, प्रकार, व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक और व्यक्तित्व मापन 31
5. बुद्धिः संकल्पना, विभिन्न बुद्धि सिद्धान्त एवं मापन 37
6. अधिगम का अर्थ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक 45
   - अधिगम के विभिन्न सिद्धान्त
   - अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाएँ
7. विविध अधिगमकर्ता के प्रकार : पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सर्जनशील, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी इत्यादि। 60
8. अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ 62
9. अभिप्रेरणा एवं अधिगम में इसका प्रभाव 65
10. समायोजन की संकल्पना, तरीकें एवं समायोजन में अध्यापक की भूमिका 70

सूचना तकनीकी (प्रौद्योगिकी)

1. सूचना तकनीकी (प्रौद्योगिकी) 75

- सूचना प्रौद्योगिकी के आधार
- सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण (टूल्स)
- सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग
- सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव

अध्याय – I

शैक्षिक मनोविज्ञान : अर्थ, क्षेत्र एवं कार्य

शिक्षा मनोविज्ञान :-

दोस्तों , शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा + मनोविज्ञान।

सर्वप्रथम शिक्षा क्या हैं :- शिक्षा शब्द की उत्पत्ति शिक्ष धातु से (संस्कृत भाषा)हुई है जिसका अर्थ होता है, सीखना।

शिक्षा के तीन आयाम -

शिक्षक छात्र पाठ्यक्रम

*जॉन डी. वी. के अनुसार :- त्रिध्रुवीय -

1. शिक्षक
2. छात्र
3. पाठ्यक्रम

*जॉन एडम्स के अनुसार :-

द्वि ध्रुवीय - शिक्षक ________ छात्र

- एज्युकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एडुकेटम से हुई है।
- एडुकेटम का अर्थ - अंदर से बाहर निकालना।
- शिक्षा का संकीर्ण अर्थ :- वह शिक्षा जो निश्चित समय व स्थान से संबंधित होती है।
- शिक्षा का व्यापक अर्थ :- वह शिक्षा जो समय व स्थान से संबंधित नहीं होती है, अपितु आजीवन चलती रहती है।

3 R = लिखना, पढ़ना, गणना करना। (Reading, Writing, Arthamatic

4 H = मानसिक विकास - Head

भावात्मक विकास - Heart

क्रियात्मक विकास - Hand

शारीरिक विकास -Health

3 H का श्रेय / वर्तमान शिक्षा के विकास का श्रेय - पेस्टोलॉजी।

परिभाषाएं :-

= **स्वामी विवेकानंद :-** मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।

= **महात्मा गाँधी :-** शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा की सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति है।

= **जॉन डी. वी :-** शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।

= **डुनेविले के अनुसार :-** शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव व अनुभव आ जाते हैं, जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।

= **पेस्टोलोजी :-** शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन तथा प्रगतिशील विकास है।

शिक्षा की विशेषताएं :-

- शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा सामाजिक व सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है।
- शिक्षा आदर्शात्मक / मूल्यात्मक है।

शिक्षा के प्रकार :-

1. औपचारिक - स्कूल,
2. अनौपचारिक - परिवार,
3. निरौपचारिक - पत्राचार।

मनोविज्ञान

दोस्तों , मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता है।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।

- 'साइकोलॉजी' शब्द की उत्पति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी(Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है, इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द " साइकोलॉजी " का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

दोस्तों, अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं।

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान**- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्ते, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकोलॉजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।

2. **मनोविज्ञान मन/मस्तिष्क का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।

4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता है। यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा है। इस विचारधारा के समर्थक वॉटसन , वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वॉटसन , वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

वुडवर्थ –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।

वॉटसन- "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।"

मैक्डूगल – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं आचरण का विज्ञान है।"

स्किनर – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है।"

क्रो एवं क्रो - "मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं मानवीय संबंधों का अध्ययन है।"

वुडवर्थ - "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।"

जेम्स ड्रेवर – "मनोविज्ञान शुद्ध विज्ञान है।"

बोरिंग एवं लेंगफील्ड - "मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।"

मैक्डूगल- मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

2. मनोविज्ञान के सम्प्रदाय

संरचनावाद सम्प्रदाय -

यह मनोविज्ञान का प्रथम सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्तक विलियम वुण्ट, टिचनर आदि हैं।

इस सम्प्रदाय के अनुसार मनुष्य की चेतना में मानसिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। चेतना में

अध्याय – 2

बाल विकास –
अर्थ, बाल विकास के सिद्धांत एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक

बाल विकास -

अर्थ :- गर्भाकाल से लेकर परिपक्व अवस्था तक का अध्ययन बाल विकास कहलाता है।

परिभाषा :-

1) **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** - बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भाकाल से लेकर किशोरावस्था के मध्य तक का अध्ययन किया जाता है।
2) **जेम्स ड्रेवर के अनुसार** - बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से लेकर परिपक्व अवस्था तक विकासशील मानव का अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास का इतिहास :-

- **रूसो ने पुस्तक** - EMILE में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया है।
- काल्पनिक शिष्य का नाम भी EMILE है
- बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला व्यक्ति - पेस्टोलॉजी, 1774
- बाल अध्ययन आंदोलन की शुरुआत - अमेरिका में 1893, स्टेनले हॉल ने की थी।
- (स्टेनले हॉल ने बाल अध्ययन समिति और बालक कल्याण संगठन की स्थापना की तथा पेड़ोलोजिकल सेमीनरी नामक पत्रिका में बाल विकास का अध्ययन किया है।)
- प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना - अमेरिका (न्यूयार्क) में 1887 मे हुई थी
- प्रथम बाल निदेशन केंद्र - विलियम हीली - शिकागो 1909
- भारत में बाल अध्ययन की शुरुआत – 1930 में हुई थी।

अभिवृद्धि (Growth) – सामान्य रूप से व्यवहारिक शब्दावलियों में जिसके लिए वृद्धि का प्रयोग किया जाता है। वह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक परिक्षेपों में अभिवृद्धि की प्रक्रिया कहलाती हैं।

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी बालक का शारीरिक पक्ष सम्मिलित होता है अर्थात् किसी बालक के शरीर की ऊँचाई, आकार तथा भार आदि प्रक्रमों में परिवर्तन देखा जाता है, अभिवृद्धि कहलाती हैं।
- फ्रैंक महोदय ने "अभिवृद्धि" cellular Multiplication को कोशकीय वृद्धि है।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में शारीरिक पक्ष में लम्बाई, चौड़ाई भार इत्यादि सम्मिलित होते हैं।
- **विकास** - बालक विकास की प्रक्रिया में विकास के अन्तर्गत किसी बालक का सम्पूर्ण विकास सम्मिलित होता है।
- इस विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक सामाजिक आदि सभी विकास सम्मिलित होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया में नैतिक, चारित्रिक तथा भावात्मक विकास इत्यादि सम्मिलित होते हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास तथा विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास में अन्तर पाया जाता है।
- अभिवृद्धि का शारीरिक विकास केवल वृद्धि (बढ़ना) तथा क्षय (घटना) को प्रदर्शित करता है। जबकि विकास का शारीरिक विकास वृद्धि तथा क्षय को प्रदर्शित करता है।

अभिवृद्धि तथा विकास में अन्तर :-

Growth(अभिवृद्धि)	Development(विकास)
• अभिवृद्धि किसी बालक के केवल शारीरिक पक्षों से संबंधित है। • अभिवृद्धि की प्रक्रिया एक निश्चित समय अर्थात जन्म से लेकर एक निश्चित समय तक चलती है। • अभिवृद्धि की प्रक्रिया एकाकी होती है। • अभिवृद्धि परिमाणात्मक रूप को परिवर्तित करती है।	• विकास की प्रक्रिया से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक सभी प्रकार विकास होते हैं। • विकास की प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। • विकास की प्रक्रिया का दृष्टिकोण सर्वांगीण होता है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है । • अभिवृद्धि की प्रक्रिया को मापा – तौला जा सकता है । • अभिवृद्धि का घटक जन्म जात होता है । • अभिवृद्धि की प्रक्रिया विकास के अंतर्गत सम्मिलित होती हैं ।	• विकास की प्रक्रिया बालक के गुणात्मक रूप को व्यक्त करती है । • विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता है । • विकास की प्रक्रिया को मापा तौला नहीं जा सकता है । • विकास का घटक अर्जित होता है । • विकास की प्रक्रिया अभिवृद्धि के अंतर्गत सम्मिलित नहीं होती है ।

बाल विकास के विभिन्न आयाम -

शैशवावस्था (जन्म – 6 वर्ष)

Infancy → In fant + Infarty

पूर्व शैशवावस्था मध्य शैशवावस्था उत्तर शैशवावस्था

(जन्म- 2 वर्ष) (2-4वर्ष) (4-6 वर्ष)

बाल्यावस्था (6-12वर्ष)

पूर्व बाल्यावस्था मध्य बाल्यावस्था उत्तर बाल्यावस्था

(6-8 वर्ष) (8-10 वर्ष) (10-12 वर्ष)

किशोरावस्था (12-18 वर्ष)

पूर्व किशोरावस्था मध्य किशोरावस्था उत्तर किशोरावस्था

(12-14 वर्ष) (14-16 वर्ष) (16-18 वर्ष)

महत्वपूर्ण कथन :-

न्यूमैन के अनुसार :-

5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।

फ्रायड के अनुसार :-

बालक को जो कुछ भी बनना होता है, वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता है।

रूसो के अनुसार :-

बालक के हाथ, पैर, नेत्र प्रारम्भिक शिक्षक होते हैं।

थॉर्नडाईक के अनुसार :-

3 से 6 वर्ष के बच्चे **अर्द्धस्वप्न अवस्था में** होते हैं।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :-

20 वीं शताब्दी को बालकों की शताब्दी कहा गया है।

गुडएनफ के अनुसार :-

बालक का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है।

शैशवावस्था में शारीरिक विकास : –

1. शैशवावस्था अंग्रेजी भाषा के in fancy शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के Infast से बना है। जहाँ Jn + Fast से तात्पर्य है नहीं बोलने की अवस्था से है। इस समय में बालक ज्यादातर रोने का कार्य करता है, जो निरर्थक माना जाता है।
2. शैशवावस्था में मानव विकास की आधारशिला एवं नींव तैयार होती है। इस काल को जीवन का आधार काल अथवा जीवन का आदर्श काल कहा जाता है।
3. शैशवावस्था के काल में बालक/बालिका में संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिस कारण इसे 'जीवन का संचयी काल' कहा जाता है।

4. इसका समय जन्म से - 6 वर्ष तक होता है । जिसमें किसी भी बालक का शारीरिक विकास अन्य विकास की अपेक्षा तीव्र होता है ।

भार (Weight)

शैशवावस्था में जन्म से लेकर अंतिम अवस्था अर्थात 6 वर्ष की आयु तक बालकों का भार बालिकाओं की अपेक्षा अधिक हो जाता है ।

लम्बाई - जन्म के समय किसी बालक की लम्बाई $20\frac{1}{2}$ इंच तथा बालिकाओं की लम्बाई 20 इंच के आसपास होती है। किन्तु दोनों की लम्बाई में बहुत अधिक, अन्तर नहीं पाया जाता है।

- लेकिन शैशवावस्था के अन्तर्गत अन्तिम समय में बालक की लम्बाई बालिका की अपेक्षा कुछ अधिक हो जाती है।

सिर एवं मस्तिष्क - शैशवावस्था के काल में जन्म के समय बच्चे के सिर का विकास कुछ शरीर के विकास का $\frac{1}{4}$ हो जाता है । जिस कारण बालक का सिर उसके शरीर की अपेक्षा अधिक बड़ा दिखाई पड़ता है। और बालक मासूम लगता है।

- जन्म के समय शिशु के सिर का कुछ भार लगभग 350gm के आस-पास है।

दांत (Teeth)-

- बाल विकास की प्रक्रिया में किसी भी बालक का जन्म के पूर्व दांत बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, लेकिन दांत निकलने की प्रक्रिया जन्म के पश्चात् (8/9 माह में) प्रारम्भ होती है।
- किसी भी बालक या बालिका में जन्म के समय कोई भी दांत नहीं होता है लेकिन जन्म से (6-7) माह में सबसे पहले नीचे के दांत निकलना प्रारम्भ होते हैं।
- किसी भी बालक में एक वर्ष की अवस्था तक लगभग छः अस्थाई दांत निकलते हैं। साथ ही (4 -5) वर्ष की अवस्था में किसी भी बालक अथवा बालिका में कुल 20 अस्थायी दांत विकसित हो जाते हैं जो क्षय होकर निकल जाते हैं।

हड्डियां [BONES] - जन्म के समय में नवजात शिशु में हड़ियों की संख्या 270 पायी जाती हैं और हड्डियां कैल्शियम (Ca) से निर्मित होती है। जिसमें फॉस्फोरस (P) मजबूती प्रदान करता है।

मांसपेशियाँ - शैशवावस्था के कार्यकाल में शारीरिक विकास के अन्तर्गत किसी भी बालक में मांसपेशियों का विकास कुल शरीर के भार का लगभग 23% तक हो जाता है ।

हृदय की धड़कन - शैशवावस्था में जन्म के साथ किसी भी बालक के हृदय में धड़कन लगभग (140 P.M.) होती है। जो शैशवावस्था के अंतिम समय अर्थात लगभग 6 वर्ष की आयु के आस-पास (100 P.M.) हो जाती है ।

बाल्यावस्था (Childhood) में शारीरिक विकास

बाल्यावस्था के काल के प्रारम्भिक काल में अर्थात् लगभग 9 वर्ष की अवस्था में पूर्व शैशवावस्था का शारीरिक विकास का प्रक्रम है। वह तीव्रता बनी रहती है। लेकिन उत्तरकालीन बाल्यावस्था में बालक तथा बालिका के विकास प्रक्रम में परिपक्वता आ जाती है । जिस कारण इस अवस्था को विकास की दृष्टि से 'परिपाद काल' कहते हैं।

बाल्यावस्था में बालक बालिका से आगे रहता है। लेकिन उत्तरकालीन समय तक बालिका का विकास बालक से आगे होता है।

भार [weight] - बाल्यावस्था के लगभग 6 वर्ष के समय बालक तथा बालिका का भार 16kg हो जाता है तथा 12 वर्ष की अवस्था के आस-पास भार लगभग 29kg के आस-पास होता है।

- प्रारम्भिक अवस्था में बालकों का भार बालिका से अधिक होता है। लेकिन अन्तर कालीन बाल्यावस्था तक बालिकाओं का भार बालकों से अधिक हो जाता है।
- **लम्बाई** - बाल्यावस्था के काल में शैशवावस्था की अपेक्षा लम्बाई में कुछ कम वृद्धि होती है। प्रारम्भिक शैशवावस्था में बालक बालिका से अधिक लम्बा होता है।

लेकिन उत्तरकाल की अवस्था तक बालिकाओं की लम्बाई बालकों की अपेक्षा अधिक हो जाती है।

नोट - फिर भी दोनों में 2-3 इंच से अधिक अन्तर नहीं होता।

सिर एवं मस्तिष्क - बाल्यावस्था में बालक/बालिकाओं के सिर के आकार में क्रमशः कुछ कम परिवर्तन होते हैं। अन्तिम समय पर बालक,

किशोरावस्था में शिक्षा :-

- शारीरिक विकास के लिए शिक्षा - खेलकूद, योग व व्यायाम।
- मानसिक विकास की शिक्षा। जैसे - करके सीखने की विधि का प्रयोग।
- संवेगात्मक विकास के लिए शिक्षा।

(उदात्तीकरण या शोधन विधि का प्रयोग)

- जीवन कौशल की शिक्षा / यौन शिक्षा।
- व्यावसायिक शिक्षा।
- किशोर के महत्व को मान्यता।
- किशोर के प्रति वयस्क जैसा व्यवहार।
- सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा।

विकास के पहलू :-

1. . शारीरिक विकास :-

शैशव अवस्था में शारीरिक विकास :-

- भार जैसे जन्म के समय लड़के का वजन अनुमानत : 7.15 पौंड व लड़की का वजन 7.13 पौंड, 5, वर्ष तक 38 से 43 पौंड हो जाता है। (औसत भार 7 पौंड)
- लम्बाई :- जन्म के समय अनुमानतः लड़के की - 20.5 ईंच, लड़की की - 20.3 ईंच। (औसत लम्बाई 50 सेमी.)
- सिर व मस्तिष्क का वजनः- कुल शरीर भाग का 25 प्रतिशत या 1/4

  वजन - 350 ग्राम ।

  विकसित 90 प्रतिशत 5 वर्ष तक।
- हड्डियां - 270, कोमल व लचीली होती है।
- दांत - दूध के दांत 6 महीने से शुरू होते हैं, नीचे के दांत पहले आते हैं,

4 वर्ष तक कुल 20 होंगे।

- माँसपेशियाँ :- कुल शरीर भार का जन्म के समय 23 प्रतिशत होती है।
- हृदय की धड़कन :- जन्म के समय 1 / 140 बार, 6 वर्ष तक 1/100 हो जाती है।

(ii) बाल्यावस्था में शारीरिक विकास :-

- भार :- 80 से 90 पौण्ड के मध्य, 10 वर्ष के बाद लड़कियों का वजन बढता है।
- लंबाई :- 6 - 12 के मध्य 2 - 3 ईंच की वृद्धि होती है।
- सिर व मस्तिष्क का वजन :- 1260 ग्राम / 95 प्रतिशत विकसित 10 वर्ष तक।
- हड्डियां :- कुल 350
- दांत :- स्थायी दांत संख्या 27 से 28
- माँसपेशियाँ:- कुल शरीर भाग का 27 प्रतिशत, 9 वर्ष तक
- हृदय की धड़कन :- एक मिनट में 85 बार।

(iii) किशोरावस्था में शारीरिक विकास :-

- भार :- लड़के का वजन लड़की की अपेक्षा 25 पौण्ड अधिक होता है।
- लंबाई :- लड़कियों की लंबाई 16 वर्ष तक, लड़कों की लंबाई 18 से 21 वर्ष तक, सर्वाधिक लंबाई इस अवस्था में बढ़ती है।
- सिर व मस्तिष्क का वजन :- 1350 ग्राम (1200 से 1400) 100 प्रतिशत विकास।
- हड्डियां - कुल 206
- दांत :- प्रज्ञा दंत - 32
- माँसपेशियाँ:- कुल शरीर भाग का 44 प्रतिशत।
- हृदय की धड़कन :- 72 बार।

शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. वंशानुक्रम।
2. वातावरण।
3. पौष्टिक भोजन।
4. नियमित दिनचर्या।
5. खेलकुद व योग का प्रभाव।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 7

विविध अधिगम कर्ताओं के प्रकार : पिछड़े , विमंदित प्रतिभाशाली, सर्जनशील, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी

बाल अपराध

- 18 वर्ष तक की आयु के वें बालक जो किसी सामाजिक, नैतिक या कानूनी नियमों का उल्लंघन करते हैं उन्हें बाल अपराध की श्रेणी में रखा जाता है ।
- बाल अपराध के प्रकार - 1. यौन अपराध 2. चुनौती देने वाली प्रवृत्ति ।

  1. चुनौती देने वाली प्रवृत्ति - लड़ाई झगड़ा करना, चोरी करना, स्कूल की संपत्ति नष्ट करना, दीवारों पर अवांछनीय चित्र बनाना, धूम्रपान करना, पीड़ा पहुंचाना, पलायनवादी, शेखी बघारना, मादक पदार्थों का सेवन करना, निर्देशित भ्रमण करना, जेब तराश करना, बिना टिकट यात्रा करना, अपराधिक प्रवृत्ति का होना ।

विशिष्ट बालक

- वह बालक जो सामान्य बालक की अपेक्षा कुछ अलग प्रकार का व्यवहार करते हैं, विशिष्ट बालक की श्रेणी में आते हैं ।
- इन बालकों की योग्यता और क्षमताओं का विकास करने के लिए विद्यालय गतिविधियों में परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है ।

  विशिष्ट बालकों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है -

1. प्रतिभाशाली बालक -

इन बालकों की बौद्धिक क्षमताएँ तथा योग्यताएँ सामान्य बालक की अपेक्षा अत्यधिक तीव्र होती है ।

प्रतिभाशाली बालक के लक्षण :-

1. बुद्धि लब्धि 140 से अधिक होती है ।
2. एक समय में एक से अधिक विषयों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं ।
3. इनकी रुचियाँ तथा जिज्ञासा व्यापक होती है ।
4. यह अपने स्तर के पाठ्यक्रम को बिना किसी सहायता के पूरा कर लेते हैं ।
5. नवीन खोज करते हैं ।
6. अपने से उच्च स्तर की समस्याओं का स्वयं समाधान कर लेते हैं ।

- अध्यापक तथा विद्यालय द्वारा इन बालकों के लिए किए जाने वाले उपाय -

  1. अध्यापक इस प्रकार के बालकों के लिए इनके स्तरानुसार अतिरिक्त कार्य का चुनाव करके इन्हें उपलब्ध कराएँ जिसका समाधान यह अपने स्तर पर कर सकें ।
  2. प्रत्येक विद्यालय में प्रक्रिया खोज परीक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए । प्रतिभाशाली बालकों का चयन करके उन्हें अकादमिक नेतृत्व प्रदान करना चाहिए ।
  3. विद्यालय समय सारणी में इस प्रकार के बालकों के लिए अतिरिक्त कालांश की व्यवस्था करनी चाहिए, जिस समय पर इन्हें मार्गदर्शन देकर इनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए ।
  4. विद्यालय में व्यक्तित्व नेतृत्व व परामर्श व्यवस्था होनी चाहिए ।
  5. इस प्रकार के बालकों को कक्षा में क्रमोन्नती प्रदान कर देनी चाहिए ।

  - प्रतिभाशाली बालकों को पढ़ाने की सर्वश्रेष्ठ विधि अनुसंधान विधि है ।
  - प्रतिभाशाली बालकों को चिंतन स्तर का शिक्षण कार्य करवाना चाहिए ।

2. पिछड़े बालक

वह बालक जो अपनी आयु स्तर से एक स्तर नीचे के कार्य को अच्छी तरह से संपन्न नहीं कर पाते हैं पिछड़े बालकों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है -

<u>सामान्य पिछड़े</u> :- वें बालक जो अपने पाठ्यक्रम के अधिकांश विषयों में कम अंक अर्जित करते हैं, वें बालक सामान्य पिछड़े बालक की श्रेणी में आते हैं।

200 कुल कार्य दिवस होंगे।

1000 कालांश होंगे।

धारा -26 : किसी भी विद्यालय में 10% से अधिक पद रिक्त नहीं रह सकते।

धारा- 27 : चुनाव, जनगणना आपदा कार्यों के अलावा अध्यापक की ड्यूटी किसी भी अन्य सरकारी कार्यों में नहीं लगाई जाएगी।

धारा- 28 : कोई भी अध्यापक निजी ट्यूशन नहीं करवा सकता।

बाल अधिकारों का संरक्षण

धारा- 31 : बाल संरक्षण अधिनियम -2005 के तहत राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग और राज्य बाल संरक्षण आयोग का गठन।

धारा -32 : बाल संरक्षण आयोग में अपील का प्रावधान।

धारा- 33 : राष्ट्रीय शिक्षा सलाहकार समिति का गठन।

धारा- 34 : राज्य शिक्षा सलाहकार समिति के सदस्यों का उल्लेख वर्तमान में सदस्य संख्या -15 है।

सूचना तकनीकी (प्रौद्योगिकी)

- सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) ऑकड़ों की प्राप्ति, सूचना संग्रह, सुरक्षा, परिवर्तन, आदान-प्रदान, अध्ययन, डिजाइन आदि कार्यों तथा इन कार्यों के निष्पादन के लिए आवश्यक कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर अनुप्रयोगों से सम्बन्धित है।
- सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर आधारित सूचना प्रणाली का आधार सूचना प्रौद्योगिकी, वर्तमान समय में वाणिज्य और व्यापार का अभिन्न अंग बन गयी है।
- संचार क्रान्ति के फलस्वरूप अब इलैक्ट्रोनिक संचार को भी सूचना प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख घटक माना जाने लगा है, और इसे सम्मिलित रुप से सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी [(Information and Communication Technology, (ICT)] के नाम से जाना जाता है। एक उद्योग के तौर पर यह उभरता हुआ क्षेत्र है।
- भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। संप्रेषण के द्वारा ही मनुष्य सूचनाओं का आदान प्रदान एवं उसे संग्रहीत करता है।
- सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक कारणों के विभिन्न मानवीय समूहों का आपस में संपर्क बन जाता है। गत शताब्दी में सूचना और संपर्क क्षेत्र में अद्भुत प्रति हुई है।
- इलैक्ट्रोनिक माध्यम के फलस्वरूप विश्व का अधिकांश भाग आपस में जुड़ गया है। सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति ने नये ज्ञान के द्वार खोल दिये हैं। बौद्धिक एवं भाषिक, शक्ति के मिलाप से सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे आर्थिक सम्पन्नता की ओर भारत अग्रसर हो रहा है।
- व्यापारिक गतिविधियाँ ई-कामर्स के रूप में आन लाइन संचालित होने लगी हैं। ऑन लाइन सरकारी कामकाज विषयक ई-प्रशासन, ई-बैंकिंग द्वारा ऑन लाइन बैंक व्यवहार, शिक्षा सामग्री के लिए ई-एजूकेशन आदि माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है।
- सूचना प्रौद्योगिकी के बहु आयामी उपयोग के कारण विकास के नये द्वार खुल रहे हैं। भारत में

सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रयोगों द्वारा अनुसंधान करके विकास की गति को त्वरता प्रदान की गई है।

- सूचना प्रौद्योगिकी में सूचना, ऑकड़ों (डेटा) तथा ज्ञान का आदान प्रदान मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में फैल गया है। हमारे आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक तथा अन्य बहुत से क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास दिखाई पड़ता है।
- इलैक्ट्रोनिक तथा डिजिटल उपकरणों की सहायता से इस क्षेत्र में निरंतर प्रयोग हो रहे हैं। आर्थिक उदारतावाद के इस दौर के वैश्विक ग्राम (ग्लोबल विलेज) की संकल्पना संचार प्रौद्योगिकी के कारण सफल हुई है।
- इस नये युग में ई कामर्स, ई-मेडिसीन, ई-एज्यूकेशन, ई-गवनेंस, ई-बैंकिंग, ई-शापिंग आदि इलैक्ट्रोनिक माध्यमों का विकास हो रहा है।
- सूचना प्रौद्योगिकी आज शक्ति एवं विकास का प्रतीक बन धुकी है। कम्प्यूटर युग के संचार साधनों में सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से हम सूचना समाज में प्रवेश कर रहे हैं।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की इस देन के कारण ही हम ज्ञान का अधिकतम सार्थक उपयोग करने हेतु ज्ञान प्रबन्धन करने में सक्षम हो पा रहे हैं। साथ ही साथ समाज ज्ञान आधारित (knowledge society) होने की दिशा में अग्रसर है।

सूचना प्रौद्योगिकी की व्याख्या -

सूचना प्रौद्योगिकी की सार्वभौमिक परिभाषा देना कठिन है परन्तु भिन्न भिन्न स्थानों पर इसे अलग अलग ढंग से परिभाषित एवं व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। कुछ प्रमुख निम्नवत हैं:

1. सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित विश्वकोश में सूचना प्रौद्योगिकी को सूचना से सम्बद्ध माना गया है। इस प्रकार के विचार डिक्शनरी ऑफ कम्प्यूटिंग में भी व्यक्त किए गये हैं। 'मैकमिलन डिक्शनरी ऑफ इनफोर्मेशन टेक्नोलोजी' में सूचना प्रौद्योगिकी की परिभाषा करते हुए यह विचार व्यक्त किया गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटिंग और दूरसंचार के संमिश्रण पर आधारित माईक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा मौखिक, चित्रात्मक मूलपाठ विषयक और संख्या संबंधी सूचना का अर्जन, संसाधन (प्रोसेसिंग) भंडारण और प्रसार है।

2. अमेरिकन रिर्पोट के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी को इन शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ है, सूचना का एकत्रीकरण, भंडारण, प्रोसेसिंग, प्रसार और प्रयोग यह केवल हार्डवेयर अथवा सॉफ्टवेयर तक ही सीमित नहीं है बल्कि इस प्रौद्योगिकी का उद्देश्य मनुष्य की महत्ता और उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना भी है।

यूनेस्को द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि यह "सूचना के संचालन तथा संसाधन के लिए वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी तथा अभियांत्रिकीय विधाओं तथा प्रबन्धन तकनीकी के प्रयोगों एवं अनुप्रयोग द्वारा सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक मामलों में मानव एवं मशीन के बीच की अन्तरक्रिया को अभिव्यक्त करती है।

सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत वे सभी उपकरण एवं पद्धतियाँ सम्मिलित हैं जो सूचना के संचालन में काम आते हैं। इसे संक्षिप्त रूप से परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि "सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसी तकनीकि है जिसमें सूचना का संचार अथवा आदान-प्रदान त्वरित गति से दूरस्थ समाजों में विभिन्न तरह के साधनों तथा संसाधनों के माध्यम से सफलता पूर्वक किया जाता है।" सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में हम जब सूचना शब्द का प्रयोग करते हैं, तब यह एक तकनीकि परिभाषिक शब्द होता है। सूचना के सन्दर्भ में "आंकड़ा और "प्रज्ञा" "विवेक" "बुद्धिमता" आदि शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। प्रौद्योगिकी ज्ञान की एक ऐसी शाखा है, जिसका सरोकार यांत्रिकीय कला अथवा प्रयोजन परक विज्ञान अथवा इन दोनों के समन्वित रूप से है। सूचना प्रौद्योगिकी एक व्यापक एवं नवीन पद है जिसमें सूचना के उत्पादन, संग्रहण, सम्प्रेषण,

सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव -

सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरी धरती को एक गाँव बना दिया है। इसने विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को जोड़कर एक वैश्विक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। यह नवीन अर्थव्यवस्था अधिकाधिक रूप में सूचना के रचनात्मक व्यवस्था व वितरण पर निर्भर है। इसके कारण व्यापार और वाणिज्य में सूचना का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। इसीलिए इस अर्थव्यवस्था को सूचना अर्थव्यवस्था (Information Economy) या ज्ञान अर्थव्यवस्था (Knowledge Economy) भी कहा जाने लगा है। वस्तुओं के उत्पादन (Manufacturing) पर आधारित परम्परागत अर्थव्यवस्था कमजोर पड़ती जा रही है और सूचना पर आधारित सेवा अर्थव्यवस्था (Service Economy) निरन्तर आगे बढती जा रही है। सूचना क्रान्ति से समाज के सम्पूर्ण क्रिया कलाप प्रभावित हुए हैं धर्म, शिक्षा, (e-learning), स्वास्थ्य (e-health), व्यापार (e-commerce), प्रशासन, सरकार (e-governance) उद्योग अनुसंधान व विकास, संगठन, प्रचार आदि क्षेत्रों में कायापलट हो गया है और आज का समाज सूचना का समाज कहलाने लगा है।

- **सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव**

ई-शासन (E-Governance) को ई-सरकार (E-Government) डिजिटल सरकार (Digital Government) ऑन-लाइन सरकार (On-line Government) या संबद्ध सरकार (Connected Government) के नाम से भी जाना जाता है। आम नागरिकों, कारोबारियों, तथा कर्मचारियों के लाभ के लिए तकनीकों के उपयोग के माध्यम से सरकारी सेवाओं की पहुँच (Access) तथा निष्पादन (Delivery) को बढ़ावा देने की प्रक्रिया को ई-शासन कहते हैं।

ई-शासन, शासन में ई-व्यापार का एक रूप है जिसमें आम नागरिकों को ई-सेवा के प्रतिपादन की प्रक्रिया तथा संरचना निहित होती है। ई-शासन, आम नागरिकों को इलेक्ट्रोनिक माध्यम से सरकार के साथ अन्योन्य क्रिया (Interaction) कर मनवांछित सेवा लेने की सुविधा को अपने अंदर समाहित करता है।

ई-मेल एंव इंटरनेट के माध्यम से आम जनता की शासन में भागीदारी को बढावा देना तथा शासन को सुगम, सरल एंव सुधारना ई-शासन का अंतिम लक्ष्य है, ई-शासन, ई-प्रजातंत्र को इंगित करता है जहाँ पर आम जनता तथा सरकार के मध्य सभी प्रकार की अन्योन्य क्रिया इलेक्ट्रोनिक रूप में होती है। ई-शासन गुणकारी तथा मूल्य साधक सेवाओं की सूचनाओं तथा ज्ञान को शासित नागरिकों तक पहुँचाने के लिए कंप्यूटर की नवीन तकनीकों तथा संचार तकनीकों जैसे इंटरनेट का उपयोग किया जाता है।

ई-शासन का मुख्य उद्देश्य सरकार द्वारा नागरिकों को एकल बिन्दु प्रतिपादन निकाय (Single Point Delivery System) के माध्यम से बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।

मुख्य उद्देश्य सरकार द्वारा नागरिकों को एकल बिन्दु प्रतिपादन निकाय (Single Point Delivery System) के माध्यम से बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराना है। ई-शासन द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली प्रमुख सेवाएँ -

1. **ई-नागरिक (E-Citizen)** - इसके अंतर्गत सरकार समाकलित सेवा केन्द्रों (Integrated Service Centres) के माध्यम से नागरिकों को जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करना, राशन कार्ड व पासपोर्ट जारी करना, पानी, बिजली, टेलीफोन तथा मोबाइल आदि के बिल जमा करना तथा कर (Tax) जमा करने की सुविधा प्रदान करती है।
2. **ई - परिवहन (E- Transport)** इसके अंतर्गत सरकार नागरिकों को मोटर वाहन पंजीकरण, चालक आज्ञा पत्र (Driving License) जारी करना, कर व शुल्क जमा करने आदि की सुविधा प्रदान करती है।
3. **ई - औषधि (E-Medicine)** - इसके अंतर्गत सरकार देश के विभिन्न भागों में स्थित चिकित्सालयों (Hospitals) का नेटवर्क स्थापित कर नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती है।
4. **ई - औषधि (E-Medicine)** इसके अंतर्गत सरकार देश के विभिन्न भागों में स्थित - चिकित्सालयों (Hospitals) का नेटवर्क स्थापित कर नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -1, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें →	https://wa.link/hx3rcz